International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गांधी, सामाजिक सह-अस्तित्व और सिनेमा की भूमिका (रोड टू संगम' फिल्म के विशेष संदर्भ में)

अंजना शर्मा[1], डॉ. रंजन सिंह[2]

[1]शोधार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल)
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, माखननाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार, विश्वविद्यालय, भोपाल)

शोध सारांशः
वैश्विकरण के इस युग में सिनेमा एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो सामाजिक गतिशीलता को प्रतिबिंबित करने और प्रभावित करने में सक्षम है। विशेष रूप से विविध समुदार्थों के बीच सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने में सिनेमा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत के स्वाधीनता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले व अपने सिद्धांतों से सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करने वाले महात्मा गांधी ने समाज के समय विकास के लिए सामाजिक सह-अस्तित्व पर विशेष बल दिया था। वह इंसानों के साथ पशुओं व प्रकृति के भी सह-अस्तित्व की बात कहते थे। इस अध्ययन का उद्देश्य बहुसांस्कृतिक समाजों में गांधी के सामाजिक सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने में सिनेमा की भूमिका का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध के लिए हिंदी फिल्म 'रोड टू संगम' का चयन किया गया है। इसके लिए गुणात्मक सामग्री विश्लेषण की शोध प्रविधि अपनाई गई है. ताकि यह जांचा जा सके कि यह फिल्म किस प्रकार गांधी के संदर्भ में सामाजिक एकता को चित्रित करती व बढ़ावा देती है।

संकेत शब्दः सिनेमा, रोड टू संगम, गांधी, सह-अस्तित्व, सत्य, अहिंसा, सामाजिक समरसता, साम्प्रदायिक सौहार्द, गांधीवाद ।

प्रस्तावनाः

गांधी का सामाजिक सह-अस्तित्व का सिद्धांत सभी धर्मों, जातियों और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच शांति और समन्वय पर आधारित था, जो एक समावेशी, शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज की नींव रखता है। वे मानते थे कि समाज का विकास तभी संभव है जब सभी लोग एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहें और एक-दूसरे के मतभेदों को समझे व उनका सम्मान करें। भारत एक बहु-सांस्कृतिक समाज का प्रतिनिधित्व करता है। जहां विभिन्न जातियों , धर्मो व संस्कृतियों के लोग रहते हैं। ऐसे बहु-सांस्कृतिक समाज में शांति, सौहार्द व प्रेम के लिए सह-अस्तित्व का भाव होना अत्यावश्यक है। सम्प्रेषण की सिनेमाई विधा की गांधी प्रेरित सामाजिक सह-अस्तित्व की भावना के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। भारतीय सिनेमा ने समय-समय पर ऐसी अनेक फिल्में दी हैं. जिनमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सामाजिक सह-

अस्तित्व का संदेश निहित दिखाई दिया है। सिनेमा को सामाजिक बदलाव का अस्त्र माना गया है। सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही तरह के बदलावों में इसनी भूमिका हो सकती है। हिंदी फिल्म 'रोड टू संगम' और महात्मा गांधी के सामाजिक सह-अस्तित्व के विचारों के बीच गहरा संबंध दिखाई देता है। फिल्म गांधी के इस विचार को अद्वितीय ढंग से दर्शाती है।

सामाजिक सह-अस्तित्व और गांधी

महात्मा गांधी के सामाजिक सह-अस्तित्व पर विचार उनके जीवन और कार्यों का एक प्रमुख हिस्सा थे। उनका मानना था कि समाज में विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग और पंथ के लोग मिल-जुलकर सामंजस्य के साथ रह सकते हैं। उनके विचार निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित थेः

1. **अहिंसा और शांतिः** गांधी का मानना था कि अहिंसा और शांति के माध्यम से समाज में विभिन्न समूहों के बीच आपसी सहयोग और समझ पैदा की जा सकती है। उनका मानना था कि हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं है. बल्कि आपसी संवाद व सहिष्णुता से ही समाधान संभव है। गांधी का कहना था कि किसी को कभी नहीं मारना तो हिंसा है ही लेकिन तमाम खराब विचार भी हिंसा हैं।
2. **सभी धर्मों का सम्मानः** गांधी का मानना था कि सभी धर्म सत्य की खोज करते हैं और समाज तभी सफल हो सकता है जब सभी धर्म और उनके अनुयायी एक-दूसरे को समझें और आदर दें। उनके लिए सह-अस्तित्व का अर्थ यह था कि सभी धर्म एक ही समाज में शांति व समन्वय के साथ फल-फूल सकते हैं। उन्होंने कहा था कि धर्म का ज्ञान होने पर अड़चने दूर होती हैं और समभाव पैदा होता है।
3. **समानता और न्यायः** गांधी ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता पर ज़ोर दिया। वे जातिवाद, छुआछूत और असमानता के सख्त विरोधी थे। उनके विचारों में समाज का हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी वर्ग या जाति का हो, समान अधिकारों व कर्तव्यों का हकदार है।
4. **सत्य और प्रेमः** गांधी के अनुसार, सत्य और प्रेम सह-अस्तित्व की बुनियाद हैं। उनका मानना था कि सभी समस्याओं को सत्य और प्रेम के माध्यम से हल किया जा सकता है. और समाज में शांति व सद्भावना बनाए रखने के लिए इन मूल्यों का पालन किया जाना चाहिए।
5. **आपसी निर्भरता और सहयोगः** गांधी का मानना था कि समाज में सह-अस्तित्व के लिए आपसी निर्भरता और सहयोग बहुत ज़रूरी है।

साहित्य का पुनरावलोकन

सामाजिक समरसता का तात्पर्य यह कहा जा सकता है कि समाज के विभिन्न धर्मो, जातियों, विश्वासों, विचारों आदि के लोगों की विशिष्टता के साथ उनके बीच समुचित संयोजन किया जाना। सामाजिक समरसता की कसौटी यह कही जा सकती है कि हर व्यक्ति विशिष्ट है परंतु एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। यह सामाजिकपन ही समरसता को मज़बूत करने की नींव है। (जोशी, 2017) गांधी के शांतिदर्शन का सबसे बुनियादी सिद्धांत अहिंसा है. जो प्रेम, जीवन व सृजन का नियम है और हिंसा जो कि घृणा, मृत्यु व विनाश का कारण है. इसके विपरीत है। गांधी के अनुसार, यदि हम व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों से बचना चाहते हैं. तो अहिंसा के सार्वभौमिक मानवीय मूल्य को न केवल व्यक्तिगत स्तर

पर बल्कि सामाजिक, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विकसित किया जाना चाहिए। (बिस्वास, 2015) गांधी उस प्राचीन भारतीय ज्ञान में विश्वास करते थे, जिसके अनुसार जहां अस्तित्व है. वहां तत्व, प्राण, पशु-पक्षी व मनुष्यों के बीच सह-अस्तित्व भी है। (गुप्ता, 2010) गांधी सहिष्णुता को असहमतियों को बर्दाश्त करने की क्षमता से जोड़कर देखते थे। धर्म पर गांधी का विचार था कि सब धर्म सच्चे हैं लेकिन सभी अपूर्ण हैं . इसलिए उनमें दोष हो सकते हैं। समभाव होने पर हम उन सब धर्मो में दोष देख सकते हैं। अपने धर्म में भी हम दोष देखें। इन दोषों के कारण हम उसे छोड़ न दें बल्कि उसके दोष मिटाएं। अगर इस तरह समभाव रखें तो हमें दूसरे धर्मो की अच्छी बातें ग्रहण करने में परेशानी नहीं होगी बल्कि इससे हमारा धर्म और भी समृद्ध हो जाएगा। (शर्मा अ., 2021) गांधीवाद वर्तमान में भी प्रासंगिक है। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को निर्देशित करने वाले मूलभूत मानदंडों में से एक है और विवादों को सुलझाने का व्यवहारिक तरीका प्रदान करता है. क्योंकि यह एक-दूसरे के लिए पारस्परिक सम्मान, गैर-आक्रामकता, गैर-हस्तक्षेप और समानता को सुनिश्चित करता है। इस प्रकार यह शांति व सद्भाव को बढ़ावा देने वाले गांधीवादी दर्शन को समाहित करता है। (शर्मा श., 2014)

शोध की प्रासंगिकता

सामाजिक सह-अस्तित्व पर गांधीवादी विचार वर्तमान समय में भी बेहद प्रासंगिक हैं। समाज में विभिन्न जातियों, धर्मो , वर्गों व नस्लों के बीच समरसता व सौहार्द के लिए उनके बीच सह-अस्तित्व का भाव होना अत्यावश्यक है। सम्प्रेषण की सिनेमाई विधा का इस भाव को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। रोड टू संगम एक ऐसी ही फिल्म है. जो विविध समुदायों के बीच सामंजस्य व सद्भाव का संदेश देती है। फिल्म ने इस संदेश की कितनी सशक्तता के साथ प्रसारित करने का प्रयास किया है, यह जानने की दिशा में यह अध्ययन बहुत उपयुक्त हो सकता है। साथ ही इससे यह भी समझा जा सकेगा कि फिल्म गांधी की सह-अस्तित्व की अवधारणा के कितनी करीब है।

शोध उददेश्यः

1. फिल्म 'रोड टू संगम' में सामाजिक सह-अस्तित्व का अध्ययन करना।
2. 'रोड टू संगम' में महात्मा गांधी के जीवन आदर्शों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु गुणात्मक शोध प्रविधि अपनाई गई है। इसके अंतर्गत चयनित फिल्म के कथानक व संवादों का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया गया है।

फिल्म रोड टू संगम, निर्देशक अमित राय।

कथानक का सार

फिल्म का कथानक उत्तर प्रदेश के इलाहबाद शहर में स्थापित है जहां एक मुस्लिम ऑटो-मैकेनिक हशमतुल्लाह (अभिनेता परेश रावल) को महात्मा गांधी की पुरानी गाड़ी का इंजन ठीक करने का काम सौंपा जाता है। इस गाड़ी का उपयोग गांधी

जी की अस्थियों के विसर्जन के लिए किया जाना है। लेकिन इस बीच इलाहबाद की अदालत में हुए विस्फोटों के चलते संदेह के आधार पर हुई गिरफ्तारियों के विरोध में मस्जिद कमेटी की ओर से बाज़ार बंद रखने का एलान कर दिया जाता है। हशमतुल्लाह को गाड़ी का काम करने में अपने ही लोगों के विरोध का सामना करना पड़ता है। हशमतुल्लाह को गांधी के अस्थि वाहन का इंजन ठीक करने की मिली जिम्मेदारी उसकी जीवन यात्रा को आध्यात्मिक मोड़ दे देती है। वह साम्प्रदायिक सौहार्द, सामाजिक सह-अस्तित्व के मूल्यों पर चलता हुआ अपनी जिम्मेदारी निभाता है।

कचानक व संवादों का अंतर्वस्तु विश्लेषण

यह फिल्म सामाजिक सह-अस्तित्व, साम्प्रदायिक सौहार्द और गांधीवादी मूल्यों पर आधारित है। फिल्म का कथानक एक साधारण व्यक्ति की कहानी के माध्यम से गांधी जी के जीवन और उनके संदेश को आधुनिक समय में प्रासंगिक बताता है।

1. **साम्प्रदायिक सौहार्द व सामाजिक सह-अस्तित्व**- फिल्म की मुख्य थीम सांप्रदायिक सौहार्द है, जो विभिन्न धर्मो के बीच शांति व सह-अस्तित्व को दर्शाती है। कथानक में शहर में साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न होता है. लेकिन नायक हशमतुल्लाह का दृढ़ संकल्प इस तनाव के बावजूद गांधीजी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करता है। फिल्म दर्शाती है कि कैसे एक व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करके समाज में शांति व सौहार्द कायम कर सकता है. भले ही उसके आस-पास तनाव व विभाजन की स्थिति हो। कथानक संकेत देता है कि चाहे कोई भी धर्म हो, मूलभूत मानव मूल्य सत्य, अहिंसा और सहिष्णुता सभी धर्मो के लिए समान होते हैं। जब मुस्लिम समुदाय के लोग एक विरोध के रूप में काम बंद करने का फैसला करते हैं. तो हशमतुल्लाह उनकी असहमति के बावजूद अपने काम को जारी रखता है. क्योंकि उसके लिए यह काम गांधी जी के प्रति एक शर्द्धांजलि है।

जब मस्जिद कमेटी की ओर से हशमतुल्लाह को इंजन का काम करने से रोका जाता है. तो उसका संवाद है. "अब समझे हम, जब उनका बात मानकर दुकान बंद कर बैठे थे, तब हम सच्चे मुसलमान थे और अब जैसे ही अपना बात रखा वैसे ही हम मज़हब के खिलाफ हो गए। ये हम लोगों को कौनसा रोग है। कौनऊ बात को मज़हब से जोड़ देते हैं।" हशमत का एक अन्य संवाद है. "हम मुसलमान नहीं हैं? इस्लाम की इज्जत हम नहीं करते? हम भी पांच वक्त की नमाज पढ़ते हैं, कुरान शरीफ हमने भी पढ़ा है.

हम जानते हैं.. जैसे गरीब की मदद करना इबादत है. प्यासे को पानी पिलाना इबादत है. वैसे ही हमारी रोज़ी भी इबादत है. खुदा का फरमान है. हम जिस इस्लाम को जानते हैं. वो हमसे कहता है. जिस देश में रहते हो जिस देश का नमक खाते हो, उस देश से वफादार रहो। उनका मज़हब उन्हें मजबूर कर रहा है कि ऊ हमें काम करने से रोकें, काहे कि हम उनका फरमान नहीं मान रहे।" हशमत अपने ही लोगों की मानसिकता पर सवाल उठाते हुए कथानक में एक अन्य स्थान पर कहता है. "आप लोग बुरा मत मानिएगा, पर हम ई जानना चाहते हैं कि ई गाड़ी गांधीजी का न होके किसी मुसलमान भाई या जिन्ना का होता तो का आप हमको रोकते"।

2. **गांधीवादी विचारों का प्रतिबिंब**- कथानक महात्मा गांधी के विचारों को आधुनिक संदर्भ में पेश करता है। गांधी के अहिंसा, सत्य और सहिष्णुता के सिद्धांतों को फिल्म के विभिन्न पात्रों और उनके कार्यों के माध्यम से उजागर किया गया है। हशमतुल्लाह का अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण और समाज के विभिन्न वर्गों के प्रति उसकी सहिष्णुता सीधे गांधीवादी आदर्श का प्रतिबिंब है। गांधी जी की गाड़ी का इंजन ठीक करना प्रतीकात्मक रूप से यह दिखाता है कि कैसे आधुनिक समाज को गांधी के विचारों और सिदधांतों की फिर आवश्यकता है।

कथानक में जब हशमत को दुकान खोलने से रोका जाता है और उससे दुकान की चाबी ले ली जाती है, तो वह तीन दिन तक बिना कुछ खाए-पीए अपनी बंद दुकान के बाहर बैठा रहता है। यह उसका सत्याग्रह ही था, जो सफल होता है और उसे दुकान की चाबी वापस मिल जाती है। कहानी में रात के अंधेरे में दुकान जा रहे हशमत पर जब तीन लड़के हमला कर देते हैं, तो उसके बाद अपने चिकित्सक मित्र के समक्ष हशमत का संवाद है. "ज्यादा से ज़्यादा का करेंगे वो धमकाएंगे, मारेगे, जान से मार डालेंगे... ठीक है। लेकिन अब वो हमारे जज्बे को नहीं रोक पाएंगे। महात्मा गांधी की तरह ही हशमत स्वयं की परवाह न करते हुए दृढ निश्चय से अपने कर्तव्य का पालन करता है। आरंभ में हशमत के विरोधी हो गए उसके रिश्तेदार, उसके साथ हुई हिंसा से विचलित हो जाते हैं और इसका बदला लेना चाहते हैं लेकिन वह उन्हें ऐसा करने से रोकता है। उसका संवाद है . "सुनो , सजा देने का हक उसको है. जिस दिन आप खुदा बन जाओ सज़ा दे देना। यहां संकेत मिलता है कि गांधी की ही तरह हशमतुल्लाह भी हिंसा के प्रत्युत्तर में हिंसा करने के खिलाफ है।

3. महात्मा गांधी का मानना था कि दूसरों को सुधारने से पहने हम स्वयं के भीतर झॉनन्नन अपनी खामियों को देखकर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए, इसके बाद ही दूसरों को बदलाव के लिए प्रेरित करना चाहिए। कथानक में जब मस्जिद कमेटी का अध्यक्ष कसूरी मुसलमानों की हालत से लिए सरकार को ज़िम्मेदार ठहराता है. तब हशमत नन संवाद ते. "आप सबना गुस्सा जायज है। पर कसूरी साहब, पुनिस और सरकार को कसूरवार ठहराने से हम अपनी जिम्मेदारी से तो मुंह नहीं मोड़ सकते। आप फिर से सोचिए ये दहशतगर्द कौन हैं. और उनको पनाह देने वाले.. वो भी कौन हैं।

हशमत बम विस्फोटों के आरोपों में हुई गिरफ्तारियों के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन के दौरान जान गंवा चुके कसूरी के भतीजे फरहान की कुरान खानी में शामिल होना चाहता है। हशमत का बेटा नहीं चाहता कि मस्जिद कमेटी का फैसना न मानने पर कमेटी सदस्यों व अन्य मुसलमानों की नाराज़गी झेल रहा उसका पिता कसूरी के घर जाए। तब हशमत कहता है कि लोगों की खुशी में भले शामित्र न हों लेकिन ग़म में शामिल होना चाहिए। वह कसूरी व अन्य लोगों के मन का मैल दूर करना चाहता है। उसका संवाद है. "अपना घर साफ रखें और पड़ौसी का मन नाहीं? ई का बात है"। हशमत के इस संवाद में भी गांधीवादी दर्शन समाहित है।

4. **समाज में नैतिक संघर्ष**- कथानक में पात्र विभिन्न नैतिक और साम्प्रदायिक संघर्षों का सामना करते हैं। हशमतुल्लाह एक ऐसे मोड़ पर खड़ा होता है, जहां उसे अपने समुदाय के साथ खड़े होने या अपने कर्तव्य पालन के बीच किसी एक का चुनाव करना होता है। फिल्म में एक जगह उसका संवाद है, "उनको ई बात का एहसास होता कि हम जिस आदमी का काम कर रहे हैं ऊ उनका भी अपना है इसी देश का है जहां हम रहते हैं, तो हमारे काम में मज़हब का अड़ंगा डालते।

कथानक इस संघर्ष के माध्यम से दिखाता है कि कैसे एक व्यक्ति को नैतिकता व आत्म-समर्पण के बीच संतुलन बनाना पड़ता है। हशमतुल्लाह का निर्णय फिल्म के नैतिक पहलुओं को और गहरा बनाता है, क्योंकि वह अपने व्यक्तिगत और साम्प्रदायिक दबावों के बावजूद सही रास्ते पर चलता है।

हशमत चाहता है कि गांधी जी की अस्थियों का कलश लेकर जा रही गाडी उसके इलाके से निकले ताकी वहां का मुस्लिम समुदाय इस यात्रा में शामिल हो सके। उसका संवाद है. "हम यह साबित करना चाहते हैं कि हम लोग भी उतने ही

वतन परस्त हैं, जितने कि और लोग। अगर हम सरकार के खिलाफ काम बंद कर सकते हैं तो इनके आखिरी सफर में शामिल होने के लिए भी दुकान बंद कर सकते हैं।"

5. **सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य**- फिल्म भारत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सन्दर्भ को उजागर करती है। फिल्म गांधी जी की अस्थियों के विसर्जन की घटना को भावनात्मक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण देती है। यह दिखाती है कि कैसे गांधीजी का जीवन और उनकी शिक्षाएं आज भी समाज में गहराई से जुड़ी हुई हैं।

हशमत कसूरी की तबियत खराब होने पर उसका हाल पूछने के लिए उसके घर जाता है। और उससे गांधी जी के अस्थि कलश की अंतिम यात्रा में शामिल होने का अनुरोध करता है। बातचीत के दौरान हशमत ऐतिहासिक घटनाओं का जिक्र करके पाकिस्तान की मांग करने वाले जिन्ना को मुसलमानों की इस हालत के लिए ज़िम्मेदार ठहराता है और आत्मावलोकन की बात कहता है। वहीं कसूरी यहां की सियासीतंत्रों पर सवाल उठाता है। हशमत कहता है कि उन्हें भी समझाने की कोशिश की जाएगी लेकिन शुरुजात तो अपने घर से करनी होगी। जब कसूरी इस पर संशय व्यक्त करता है. तब हशमत का संवाद है. "कसूरी साहब मुमकिन है ये। नोआखली के दंगों में 42 घंटों में पांच हजार लोगों को मार दिया गया था। मिलट्री और पुलिस तक ने हाथ उठा लिए थे। अगर एक आदमी महज तिहत्तर घंटों में बिना कोई हथियार उठाए ये दंगे रोक सकता है तो दुनिया में कुछ भी मुमकिन है "। हशमत का यह संवाद गांधीवाद में उसकी आस्था की अभिव्यक्ति है।

6. **मानवता और सहिष्णुता का संदेश** - फिल्म का मुख्य संदेश है कि धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवता और सहिष्णुता को अपनाया जाना चाहिए। हशमतुल्लाह का चरित्र यह दिखाता है कि एक साधारण व्यक्ति भी अपने व्यक्तिगत व नैतिक मूल्यों के माध्यम से समाज में बड़ा बदलाव ला सकता है। फिल्म इस विचार को प्रोत्साहित करती है कि हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी धर्म या समाज का हो, मानवता के लिए एकजुट होकर काम कर सकता है। कथानक में हशमत मस्ज़िद में जमा हुए लोगों से गांधी जी के अस्थिकलश की अंतिम यात्रा में शामिल होने का अनुरोध करता है। उसका संवाद है. "हमारी आप सब लोगों से गुजारिश है कि उस गाड़ी के साथ चलें। ई कसौटी का समय है। और अगर हम लोग कदम पीछे करते हैं तो फिर हमें खुद से ये पूछना होगा कि हम सब लोग इस देश में का कर रहे हैं। अगर इस देश को आजाद कराने वाले नेता को इज्जत नहीं दे सकते तो फिर हम इहां काहे हैं। का हम इहां मेहमान हैं। हम सब हिंदुस्तानी हैं और ई हमरा वतन है। कल वो आदमी खुद हमारे इलाके से गुजरेगा... उस गाड़ी पर बैठकर जो हमने बनाया है। और आप सब जानते हैं, उसको बनाने का हौसला और जज्बा आप ही लोगों ने हमको दिया है। यह संवाद एक सहिष्णु व मानवीय समाज का चित्र प्रस्तुत करता है।

7. **प्रतीकात्मकता**- फिल्म में गांधी जी की गाड़ी और उसका इंजन प्रतीकात्मक रूप में कई अर्थों को दर्शाते हैं। यह गाड़ी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक के रूप में कार्य करती है. और जब हशमतुल्लाह उसे ठीन्स करता है, तो यह भारतीय समाज के पुनर्निमाण और सुधार का प्रतीक बन जाता है। इंजन को पुनर्जीवित करने की प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे गांधी जी के विचारों को पुनर्जीवित करने और उन्हें समाज में लागू किए जाने की आवश्यकता है।

8. **पात्रों का विकास-** हशमतुल्लाह के विनदार का विकास फिल्म की सबसे महत्वपूर्ण बात है। शुरुआत में वह एक साधारण मैकेनिक के रूप में दिखाई देता है. लेकिन जैसे-जैसे कथानक आगे बढ़ता है. उसके अंदर एक आत्म-चिंतन और परिवर्तन होता है। वह अपने समाज, धर्म व अपने व्यक्तिगत जीवन के बीच संघर्ष करता है, लेकिन अंततः उचित व नैतिक रास्ते को चुनता है। इस परिवर्तन के माध्यम से फिल्म यह संदेश देती ह कि नैतिक साहस और सत्य का पालन करना व्यक्ति को आंतरिक शक्ति प्रदान करता है। कथानक में हशमत की सच्चाई, कर्तव्यनिष्ठा, नैतिकता, दृढनिश्चय और मानवता की वजह से उससे दूर व उसके खिलाफ हुए लोग ही धीरे-धीरे कर उसका साथ देने लगते हैं। फिल्म में कसूरी के घर पहुंचे

हशमत को जब मौत्राना घर से बाहर निकालने के लिए कहता है. तो उससे खफा रहे दोस्त एक बार फिर मदद के लिए पहुंच जाते हैं। वे हशमत को नाराज़गी दिखाते हैं कि वह वहां क्यों पहुंचा। इस पर हशमत का संवाद ते. "हमको कौनउ मलाल नाहीं है। उल्टा मजा आ रहा है। देखिए.. ना ही हमने अपनी रूह को देखा है और ना ही खुदा को देखा है लेकिन जब सच्चे दोस्तों की उम्मीद करेंगे ना तो आप तीनों हमें ज़रूर दिखाई देंगे"।

निष्कर्षः

'रोड टू संगम' फिल्म विभिन्न धर्मो, जातियों व वर्गों में विभाजित भारतीय समाज के लिए सामाजिक समरसता व सामाजिक सह-अस्तित्व का संदेश देती है। फिल्म बताती है कि महात्मा गांधी के सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। फिल्म का कथानक हशमतुल्लाह की व्यक्तिगत यात्रा के माध्यम से गांधी जी के सिद्धांतों का अन्वेषण करता है और समाज में शांति, सहिष्णुता और एकता की आवश्यकता पर जोर देता है। गांधी जी के अहिंसा, सत्य, सह-अस्तित्व और मानवता के सिद्धांत फिल्म की मुख्य धारा में बहते हैं। उनके सर्वधर्म समभाव और समाज सेवा के आदर्श कथानक में गहरे रूप से निहित हैं। फिल्म संदेश देती ह कि कैसे गांधी जी के विचार अपनाकर हम शांति, एकला और सह-अस्तित्व की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. अंजना शर्मा, (2021). गांधीवादी मूल्य और भारतीय मीडियाः एक विश्लेषण, द एशियन थिंकर, 91-99.
2. अमित राय (निर्देशक). (2009). रोड टू संगम (चलचित्र)।
3. डॉ. शंभु जोशी. (2017). सामाजिक समरसताः गांधीय परिप्रेक्ष्य. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लीनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 401-404.
4. तनुश्री मुखर्जी. (2014). इमरजेंस ऑफ सिनेमा एन ए स्ट्रांग टून ऑफ सोशन चेंज. ग्लोबल जर्नल फॉर रिसर्च एनेलिसिस, 229-233.
5. पवन कुमार गुप्ता. (2010). रिविज़िटिंग महात्मा गांधी. डायलॉग (ए क्वार्टर्ली जर्नल ऑफ आस्था भारती)
6. प्रार्थिता बिस्वास. (2015). शांति शिक्षा पर महात्मा गांधी के विचार. शिक्षा पत्रिका, 10-12
7. फ़रीहा आसिफ़, & जगमोहन संघा. (2022). फिल्म एज ए सिग्निफिर्केट फेक्टर इन फॉस्टरिंग पीस एंड जस्टिस इन सोसाइटी. जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस एंड पब्लिक अफेयर्स, 362
8. महात्मा गांधी. (1958). मंगल प्रभात. अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन.
9. महात्मा गांधी. (1960). मेरे सपनों का भारत. अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन.
10. राजीब नंदन, & अमीना खातून रिंकी. (2018). प्रिंसिपल्स एंड पीस कम्यूनिकेशन ऑफ महात्मा गांधीः ए सिमियोटिक एनेलिसिस, ग्लोबल मीडिया जर्नल इंडियन एडिशन.
11. श्रुति शर्मा. (2014). गांधियन वर्चुज़ः द मंत्रा फॉर पीसफुल को-एक्ज़िस्टेंस एंड स्पिरिचुअल ग्रोथ. इंडियन जर्नल ऑफ पॉज़िटिव सायकोलॉजी, 131-136.